The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 10 | October 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

1857 की क्रान्ति और मातादीन वाल्मीकि

डॉ० फ़ैज़ान अहमद
प्रोफ़ेसर (राजनीति विज्ञान) एवं कार्यवाहक प्राचार्य
जी०बी०पन्त (पी०जी०) कालेज, कछला, बदायूँ (उ०प्र०)
gbpantdegreecollege@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, १८५७ ई० की क्रान्ति, क्रान्ति के सूत्रधार, इतिहासकारों द्वारा उपेक्षा, षहादत।

DOI:
10.5281/zenodo.14104019

ABSTRACT

मातादीन वाल्मीकि एक भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी थे। उन्होंने १८५७ ई० की क्रान्ति के प्रारम्भ होने से ठीक पहले की घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वे ब्रिटिष ईस्ट इण्डिया कम्पनी की कारतूस निर्माण इकाई में सफ़ाई कर्मी थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने १८५७ ई० के विद्रोह के बीज बोए थे। यदि मातादीन वाल्मीकि न होते तो १८५७ ई० का महान् विद्रोह इतिहास के पन्नों में दर्ज नहीं होता और न ही मंगल पाण्डे विद्रोह के नायक बनते। लेकिन भारतीय इतिहासकारों द्वारा मातादीन वाल्मीकि के बलिदान को भुला दिया गया है। मातादीन वाल्मीकि ०८ अप्रैल १८५७ ई० को अपनी मातृभूमि के लिए षहीद हो गए।

प्रस्तावना–

भारत में दलितों को लेकर अक्सर विरोधी माहौल बनते रहते हैं, पर सच यह है कि चाहे सामाजिक व्यवस्था हो या देष की आज़ादी की लड़ाई हो, दलितों ने हर जगह बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया है। १८५७ ई० की क्रान्ति के नायक के रूप में हम सभी मंगल पाण्डे को जानते हैं, पर वास्तविकता यह है कि इसकी पटकथा मातादीन वाल्मीकि नामक एक दलित ने लिखी थी। वैसे तो १८५७ ई० की क्रान्ति की पटकथा ३१ मई को लिखी गई थी, लेकिन वास्तविकता यह है कि मार्च में ही विद्रोह छिड़ गया था। जो जाति व्यवस्था हिन्दू धर्म के लिए हमेषा अभिषाप रही, उसी ने १८५७ ई० की क्रान्ति की पहली नींव रखी।

१८५७ ई० की क्रान्ति को घोशित तौर पर भारत का पहला स्वतन्त्रता संग्राम माना जाता है। भारतीय इतिहासकारों द्वारा इस क्रान्ति का पूरा श्रेय मंगल पाण्डे को दिया जाता है, लेकिन वास्तव में इस क्रान्ति के सूत्रधार मातादीन वाल्मीकि थे। मातादीन वाल्मीकि मूलत: मेरठ के रहने वाले थे, लेकिन रोज़ी – रोटी के लिए इनके पूर्वज तत्कालीन ब्रिटिष प्रेसीडेन्सी बंगाल में जाकर बस गए थे। इनके

पिता का नाम जयनारायण वाल्मीकि था। उस समय की सामाजिक परिस्थितियों के कारण वे पढ़–लिख नहीं पाए थे। हालांकि मातादीन के पूर्वज षुरू से ही अंग्रेज़ों के सम्पर्क में आने से सरकारी नौकरी में रहे थे। अत: षीघ्र ही मातादीन वाल्मीकि को भी बैरकपुर छावनी स्थित हथियार बनाने वाली फ़ैक्ट्री में सफ़ाई कर्मी की नौकरी मिल गई।

बैरकपुर छावनी कलकत्ता (वर्तमान में कोलकाता) से मात्र १६ कि०मी० दूरी पर स्थित है। इस हथियार फ़ैक्ट्री में अंग्रेज़ी सेना के सिपाहियों के लिए कारतूस बनाए जाते थे। अंग्रेज़ी सेना के निकट रहने के कारण मातादीन के जीवन पर उसका खासा असर भी पड़ा। अनुषासन, संयम, स्वाभिमान, स्पश्टवादिता आदि गुण उन्होंने सैनिकों की संगत से ही पाए थे। अंग्रेज़ी सेना के सम्पर्क में रहने से मातादीन को वहाँ की सारी गतिविधियों की जानकारी रहती थी।

मातादीन वाल्मीकि को पहलवानी का भी षौक़ था। वह मल्लयुद्ध कला में दक्षता हासिल करना चाहते थे। अछूत होने के कारण किसी भी हिन्दू उस्ताद ने उन्हें अपना षिश्य नहीं बनाया, लेकिन षीघ्र ही उनकी मल्लयुद्ध सीखने की इच्छा पूरी हो गई, जब एक मुसलमान उस्ताद इस्लाहुद्दीन उन्हें मल्लयुद्ध सिखाने के लिए राज़ी हो गए। षीघ्र ही मातादीन मल्लयुद्ध में निपुण हो गए। इसी मल्लयुद्ध कला की बदौलत मातादीन की मंगल पाण्डे से दोस्ती हुई। मंगल पाण्डे स्वयं भी मल्लयुद्ध के षौक़ीन थे। एक कुष्ती प्रतियोगिता में मातादीन का सुदृढ़ षरीर और कुष्ती का बेहतरीन प्रदर्षन देखकर मंगल पाण्डे गदगद हो गए। इस्लाहुद्दीन के अखाड़े और मातादीन के नाम के कारण मंगल पाण्डे ने उनकी छवि एक मुस्लिम पहलवान की बना ली थी। मातादीन को यह भनक लग चुकी थी कि मंगल पाण्डे उन्हें मुसलमान समझ रहे हैं। अत: उन्होंने मंगल पाण्डे को अपनी जाति बता दी। इसके बाद मातादीन के प्रति मंगल पाण्डे का व्यवहार बदल गया था।

१८५७ की क्रान्ति के सूत्रधार– मातादीन वाल्मीकि को १८५७ ई० की क्रान्ति का प्रणेता एवं सूत्रधार माना जाता है। एक दिन गर्मी से तर–बतर, थके–मांदे और प्यासे मातादीन ने मंगल पाण्डे से पानी का लोटा माँगा। **मंगल पाण्डे** ने इसे एक अछूत का दुस्साहस समझते हुए कहा कि **''अरे भंगी, मेरा लोटा छूकर अपवित्र करेगा क्या?''**[१] इसके प्रतिउत्तर में **मातादीन** ने मंगल पाण्डे को ललकारते हुए कहा कि **''कैसा है तुम्हारा धर्म जो एक प्यासे को पानी पिलाने की इजाज़त नहीं देता और गाय, जिसे तुम माँ मानते हो तथा सूअर, जिससे मुसलमान नफ़रत करते हैं, उन्हीं के चमड़े और चर्बी से बने कारतूसों को मुँह से काटकर बन्दूक़ों में भरते हो।''**[२] मंगल पाण्डे यह सुनकर चकित रह गए। इसके बाद उन्होंने मातादीन को सम्मान से पानी पिलाया।

मातादीन की यह बात मंगल पाण्डे तक ही सीमित नहीं रही, बल्कि एक बटालियन से दूसरी बटालियन तक और एक छावनी से दूसरी छावनी तक फैलती चली गई। इस सच को जानकर मुसलमान भी बौखला उठे। इतिहासकारों का मानना है कि **''मातादीन के इसी तंज़ ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों में विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित कर दी। यहीं से अंग्रेज़ों के प्रति भारतीय सैनिकों में नफ़रत पैदा होने लगी। सैनिकों ने कारतूस को दांत से काटने से मना कर दिया।''**[३] इसके बाद मंगल पाण्डे ने विद्रोह कर दिया। उन्होंने २९ मार्च १८५७ ई० को बैरकपुर के परेड मैदान में तलवार और राइफ़ल से लैस होकर अपने साथियों को बग़ावत के

लिए उकसाया और दो अंग्रेज़ अधिकारियों मेजर हयूसन और लेफ़्टीनेन्ट हेनरी बॉग पर आक्रमण कर उन्हें घायल कर दिया। मंगल पाण्डे को गिरफ़्तार कर लिया गया।

इस घटना के बाद भारतीय सैनिकों में विद्रोह भड़क उठा। मातादीन वाल्मीकि भी कर्तव्य निभाने में पीछे नहीं रहे। प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता **गणेषीलाल वर्मा** ने कहा है कि **''प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का षोला मंगल पाण्डे थे, तो षोले में आग पैदा करने की प्रथम चिंगारी मातादीन वाल्मीकि ने दी थी। उन्होंने अंग्रेज़ों के रखे हथियारों, गोला–बारूद एवं रसद के ठिकानों का पता विद्रोही सिपाहियों को बता दिया और १८५७ की क्रान्ति में बड़े सहयोगी बन गए।''**[४] बाद में अंग्रेज़ों ने भारतीय सैनिकों को विद्रोह के लिए भड़काने का मुख्य आरोपी मातादीन वाल्मीकि को माना। यह मुक़द्मा 'ब्रिटिष सरकार बनाम मातादीन' के नाम से चला। सभी गिरफ़्तार क्रान्तिकारियों को कोर्ट मार्षल के द्वारा फाँसी की सज़ा सुनाई गई। मातादीन वाल्मीकि अपनी पवित्र मातृभूमि के लिए ०८ अप्रैल १८५७ ई० को षहीद हो गए। पहली फाँसी मातादीन को दी गई। उसके बाद मंगल पाण्डे और अन्य गिरफ़्तार सैनिकों को फाँसी दी गई। इस घटना के लगभग एक महीने बाद ही १० मई १८५७ ई० को मेरठ की छावनी में भारतीय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। बाद में क्रान्ति की ज्वाला पूरे उत्तर भारत में फैल गई।

इतिहासकारों द्वारा उपेक्षा– भारतीय इतिहासकारों ने मातादीन वाल्मीकि की घोर उपेक्षा की है। वास्तविकता यह है कि यदि मातादीन वाल्मीकि नहीं होते तो १८५७ ई० का महान् विद्रोह इतिहास के पन्नों में दर्ज नहीं होता और न ही मंगल पाण्डे इस विद्रोह के नायक बनते। **गणेषीलाल वर्मा** का मानना है कि **''षहीद मातादीन वाल्मीकि १८५७ ई० की क्रान्ति के जनक थे, जिनकी षहादत को इतिहास के पन्नों में कहीं दबा दिया गया है।''**[५] मातादीन वाल्मीकि ने हमारी आज़ादी के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

मातादीन वाल्मीकि ईस्ट इण्डिया कम्पनी की कारतूस निर्माण फ़ैक्ट्री में सफ़ाई कर्मी का काम इसलिए करते थे क्योंकि उस समय चमड़े और मृत जानवरों की खाल से काम करना निम्न जातियों का व्यवसाय माना जाता था। रूढ़िवादी उच्च जाति के हिन्दू उन्हें अपवित्र मानते थे। जब देष के स्वतन्त्रता आन्दोलन की बात छिड़ती है, तो समाज के कमज़ोर वर्ग के लोग उसमें कहीं नहीं दिखते। जो लोग अंग्रेज़ों के साथ रहे वे 'राय साहब', 'राय बहादुर' तथा 'ख़ान बहादुर' आदि की उपाधियों से सुसज्जित होते रहे। उन्हें देषभक्तों की श्रेणी में ला दिया गया, जबकि उनके ऊपर न जाने कितने क्रान्तिकारियों के खून का कर्ज़ चढ़ा है। **सबाल्टर्न इतिहासकारों** का मानना है कि **''मातादीन वाल्मीकि को १८५७ ई० के विद्रोह के पीछे का असली चेहरा माना जाना चाहिए। ऐसा इसलिए क्योंकि वे ही वह व्यक्ति थे जिन्होंने मंगल पाण्डे को इस तथ्य से अवगत कराया कि अंग्रेज़ों द्वारा जाने–अनजाने में उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाई जा रही है।''**[६] इस प्रकार वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने १८५७ ई० की क्रान्ति के बीज बोए।

निश्कर्श– इस प्रकार कहा जा सकता है कि मातादीन वाल्मीकि एक बड़े देषभक्त तथा महान् स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी एवं क्रान्तिकारी थे। उन्होंने १८५७ ई० की क्रान्ति के प्रारम्भ होने से ठीक पहले की घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यदि उन्हें '१८५७ ई० की क्रान्ति का सूत्रधार' कहा जाए तो कोई अतिषयोक्ति नहीं होगी। लेकिन यह खेद का विशय है कि भारतीय इतिहासकारों द्वारा उनकी घोर उपेक्षा की गई है।

इससे बढ़कर विडम्बना और क्या हो सकती है कि इतिहास में मंगल पाण्डे का नाम षहीदों में सबसे ऊपर है। लेकिन आज़ादी का मन्त्र फूँकने वाले मातादीन वाल्मीकि को भारत के इतिहास में वह स्थान नहीं मिला जिसके वह वास्तिवक हक़दार हैं। ऐसा षायद इसलिए है क्योंकि वह एक दलित क्रान्तिकारी योद्धा थे। अत: आज आवष्यकता इस बात की है कि उनके समय के इतिहास की निश्पक्ष व्याख्या हो तथा उन पर अधिकाधिक षोध कार्य किए जाएं, ताकि भारत की नई पीढ़ी उनके महान् बलिदान से प्रेरणा लेकर एक महान् राश्ट्र का निर्माण कर सके। नि: सन्देह उनके महान् बलिदान की प्रेरणा से हम एक मज़बूत राश्ट्र एवं भेदभाव रहित समाज की स्थापना करने में सफल होंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

- https://www.dalitdastak.com – पृश्ठ 02 – दिनांक 19/09/2024 से उद्धृत
- संपा० डॉ० सूर्यकान्त षर्मा, डॉ० नीषू कुमार – 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के अनछुए पहलू : एक विष्लेशण– पृश्ठ 139 – नालंदा प्रकाषन, दिल्ली – संस्करण 2022 ई०।
- संपा० श्री नवीन कुमार, डॉ० धर्मेन्द्र कुमार, डॉ० नीषू कुमार – 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के अविवेचित पक्ष – पृश्ठ 168 – नालंदा प्रकाषन, दिल्ली – संस्करण 2022 ई०।
- https://www.jagran.com. पृश्ठ 01 – दिनांक 19/9/2024 से उद्धृत।
- वही, पृश्ठ 01 ।
- https://en.wikipedia.org – पृश्ठ 01 – दिनांक 19/09/2024 से उद्धृत।